

बाल मनोवैज्ञान

* वैयक्तिक भिन्नता *

- * कोई भी दो व्यक्ति एक जैसे नहीं हो सकते।
- * प्रतिपादक — फ्रांसिस गाल्टन
- * प्रत्येक शिक्षार्थी स्वयं में विशिष्ट होता है।
- * "वैयक्तिक विभिन्नताओं से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं से है, जिनका मापन व मूल्यांकन किया जा सकता है — स्किनर"
- * "कोई भी व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से भिन्नता रखते हैं — डैवर"
- * वैयक्तिक भिन्नता के प्रकार : —
 - ① भाषा के आधार पर
 - ② लिंग "
 - ③ बुद्धि "
 - ④ परिवार व समुदाय "
 - ⑤ जाति "
 - ⑥ संवेग "
 - ⑦ धार्मिक "
 - ⑧ शारीरिक विकास "
 - ⑨ अभिवृत्ति "
 - ⑩ व्यक्तित्व "

* वैयक्तिक विभिन्नता के कारण :-

- ① वंशानुक्रम
- ② वातावरण
- ③ आयु एवं बुद्धि
- ④ परिपक्वता
- ⑤ लैंगिक विभिन्नताएँ

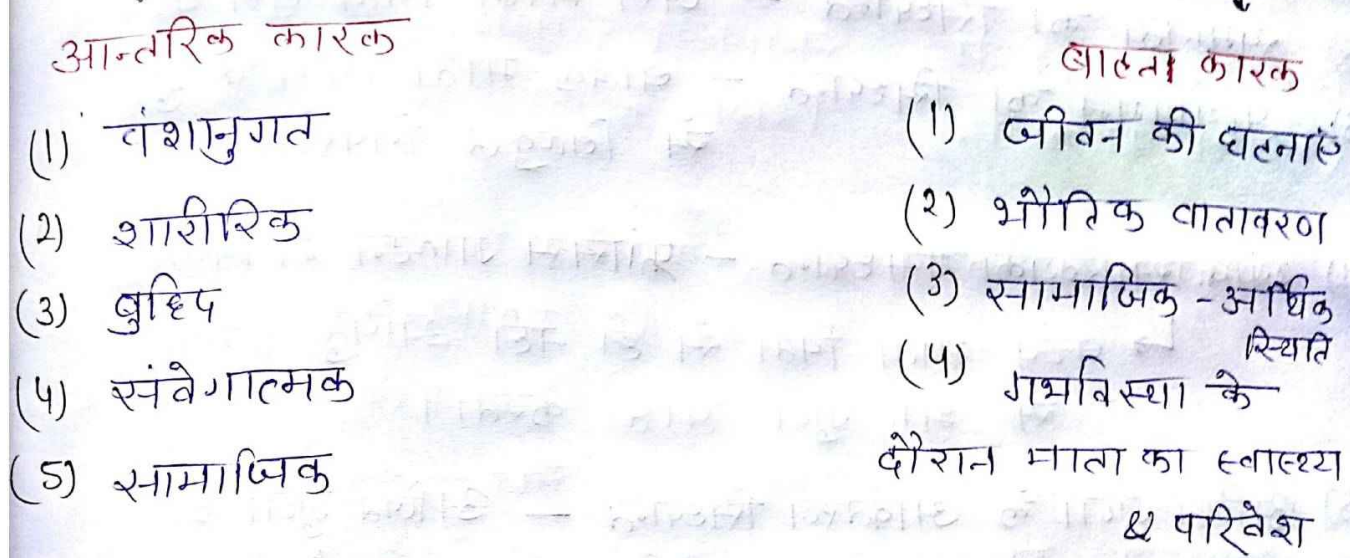
* वैयक्तिक विभिन्नता जानने की विधियाँ :-

- ① बुद्धि परीक्षण
- ② उपलब्धि "
- ③ संवेग "
- ④ अभिसमता "
- ⑤ अभिरुचि "
- ⑥ व्यक्तित्व "

* शिक्षा के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता :-

- ① शिक्षा का स्वरूप
- ② पाठ्यक्रम का निर्धारण

* बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक *



* वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का योग है — जी. एन. आ.

* वंशानुक्रम में वे सभी बातें आ जाती हैं, जो जीवन का आरम्भ करते समय, जन्म के समय नहीं, वरन् ^{गर्भविस्था} ~~गर्भविस्था~~ के समय, व्यक्ति में उपस्थित थी — कुडवर्थ

* माता-पिता की शारीरिक & मानसिक विशेषताओं का संतानों में हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है — जेम्स डैवर

* वंशानुक्रम व वातावरण योगफल न होकर गुणनफल है — कुडवर्थ

* बीजकोष की निरन्तरता का नियम दिया — बीजमैने

* आनुवंशिकता के सिद्धान्त :-

- (1) बीजकोष की निरन्तरता का सिद्धान्त
- (2) समानता का सिद्धान्त - जैसे माता-पिता तैसे बच्चे
- (3) प्रत्यागमन का सिद्धान्त - बालक माता-पिता के गुणों से बिल्कुल विपरीत
- (4) जीव संश्लेषण का सिद्धान्त - फ्रांसिस गाल्टन ने दिया
 ↳ बच्चे माता-पिता से ही नहीं अपितु पूर्वजों से भी गुण प्राप्त करता।
- (5) अभिन्न गुणों के अविवरण सिद्धान्त - अभिन्न गुणों को दृष्टान्तरण माता-पिता द्वारा बच्चों में नहीं होता
- (6) अभिन्न गुणों के विलक्षणता का सिद्धान्त - अभिन्न गुणों का विलक्षणता संतानों में होता है
 - (i) लैमार्क का
 - (ii) डार्विन का
 - (iii) भिन्नता का - सौर-सन

* वंशानुक्रम का प्रभाव :- बालक पर प्रभाव पड़ता है।

- | प्रभाव | प्रतिपादक |
|----------------------------|------------------------|
| (1) मूल शक्तियों पर प्रभाव | → थानीडासक |
| (2) शारीरिक लक्षणों | → कार्ल पिथर्सन |
| (3) प्रजाति की श्रेष्ठता | → वलॉर्क / वल्लीम वर्ग |
| (4) व्यावसायिक शौच्यता | → कैटल |
| (5) चरित्र पर | → डगडेल |
| (6) महानता | → गाल्टन |
| (7) वृद्धि पर | → गौडि |
| (8) संचयी प्रभाव | → कोलसॉनिक |
| (9) सामाजिक स्थिति पर | → विनासिप |

* वातावरण के कितने कारक हैं — 3

- सामाजिक कारक
- सांस्कृतिक "
- आर्थिक "

* वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है — संसा

* विकास होता है — सामान्य से विशिष्ट

* विकास पूरी प्रक्रिया बालक की गणविस्था से लेकर जीवन पर्यन्त तक चलती है — हरलॉक

* विकास ^{सम्बंध} होता है — गुणात्मक & परिमाणात्मक

* बाल विकास के सिद्धान्त : —

- (1) निरन्तरता का — विकास न रुकने वाली प्रक्रिया है।
- (2) वैयक्तिक विभिन्नता का — बालकों का विकास और वृद्धि उनकी वैयक्तिकता के अनुरूप हैं।
- (3) विकास क्रम की एकरूपता — विकास की गति एक जैसी न होने पर कुछ एकरूपता हो होती।
- (4) परस्पर सम्बंध का — विकास के सभी आयाम एक-दूसरे से सम्बंधित हैं।
- (5) श्रुतीकरण का — बालक पहले सम्पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता।
- (6) वृद्धि & विकास की दर एक-समान नहीं होती।
- (7) विकास की भाविष्यवाणी की जा सकती है।
- (8) विकास लम्बवत् न होकर वक्राकार होता है।

(9) विकास की दिशा का सिद्धान्त

शिरः पदभिमुख दिशा
(शिर से पैर की ओर)

समीपस्थ दूरभिमुख दिशा
(शरीर के केन्द्र से बाहर की ओर)

(*) समाजीकरण कितने प्रकार का होता है — 2

① प्राथमिक (मुख्य) स.

② द्वितीय (गौण) स.

* परिवार & मित्र जिस समाजी. में आते — प्राथमिक

* विद्यालय & निवृत्त परिवार के सदस्य जिस समाजीकरण में आते — द्वितीय (गौण)

* समाजीकरण प्रारम्भ होता है — जन्म से

* स्व वर्णन का सिद्धान्त दिया — कूल्टे ने

(*) मनोसामाजिक / जीवन अवधि का सिद्धान्त दिया — एरिक्सन

* परिस्थिति परक सिद्धान्त दिया — ब्रौनफेल्ड

* सामाजिक प्रत्याशा के अनुरूप व्यवहार की योग्यता

का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता

है — हर्श्लॉक

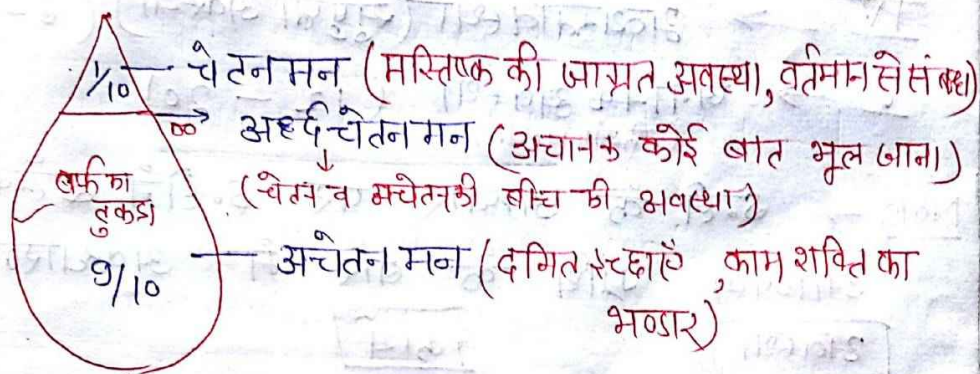
* बाल केन्द्रित शिक्षा है — पूर्णतः मनोवैज्ञानिक

* पाठ्यक्रम होना चाहिए — लचीला

मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त

प्रतिपादन → सिंगमन फ्राइड (ऑरिद्रश-विथना)

⇒ मन की तीन अवस्था → फ्राइड



⇒ फ्राइड के अनुसार व्यक्तित्व की दृष्टि से तीन अवस्था

Id (इड)	Ego (अहम्)	Superego (परहम्)
<ul style="list-style-type: none"> → नियंत्रण न होना, पशु-प्रवृत्ति → काम शक्ति का भण्डार → इच्छाओं का भण्डार → इस प्रकार से इसे "अचेतन मन" का राजा कहते हैं। 	<ul style="list-style-type: none"> → वास्तविकता से संबंध → "चेतन मन" का स्वामी → Id पर नियंत्रण करना इसी का कार्य 	<ul style="list-style-type: none"> → आदर्शवादी, नैतिकता, सामाजिक (आदर्शवादी सिद्धान्त) पर आधारित → Id/Ego दोनों पर नियंत्रण
<ul style="list-style-type: none"> * ये अवस्था रौशवस्था की भाँति होती है। * जन्मजात प्रवृत्तियाँ 	<ul style="list-style-type: none"> * ये अवस्था लाव्यावस्था की भाँति होती है। 	<ul style="list-style-type: none"> * किशोरवस्था की भाँति।

⇒ फ्राइड ने दो मूल प्रवृत्ति दी → जीवन & मृत्यु।

Note → रौशवकामुकता की बात पर फ्राइड और उनके शिष्य युंग/जुंग

एरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धान्त -

- ↳ बालकों और किशोरों में व्यक्तिगत पहचान इस प्रकार विकसित हो, इसलिए ये सिद्धान्त दिया।
- ↳ पूरी जीवन - अवधि को 8 भागों में बाँटा।
- ↳ इसे जीवन अवधि विकास का सिद्धान्त भी कहते।

Stage 1 -

विश्वास बनाम अविश्वास (0-18 माह)

जब बच्चे को माँ-बाप का प्यार मिलता है, तो बच्चे में भरोसा (विश्वास) होता है - 😊

जब माँ-बाप का प्यार नहीं मिलता तो वह निराशा (अकेलापन) सा महसूस करता है - 😞

Stage-2

स्वायत्तता बनाम शर्म (18-3 वर्ष)

अगर बच्चे को खेलने - कुदने की स्वतंत्रता दी जाए तो बच्चा कहता है - *I can do this.*

अगर बच्चे के खेलने - कुदने न दिया जाए तो उसमें शर्म (संदेह) की भावना होगी और वह कहेगा -

I can't do this.

Stage - 3

पहल बनाम अपराधबोध (3-6 वर्ष)

बच्चों को चुनौतियाँ \Rightarrow यदि बच्चों को प्रोत्साहित नहीं करेंगे
का समझना करने के तो बच्चों के मन में अपराध की
लिख प्रोत्साहित करना प्रवृत्ति जाग्रत होगी।
चाहिए।

परिक्षम बनाम निरुपेक्षा (हीन भावना) (6-12 वर्ष)

यदि बच्चे के उद्यम (परिक्षम) \Rightarrow यदि उसके परिक्षमी भावना
का विकास पर ध्यान दिया पर ध्यान न दिया जाए
भाह तो बच्चा परिक्षमी तो बच्चों के अन्तर
बनेगा। हीन भावना आ जायेगी।

~~अस्मिता बनाम अलगाव~~

पहचान बनाम पहचान भ्रान्ति (12-18 वर्ष)

जब बच्चा परिक्षमी बनेगा \Rightarrow अगर परिक्षम की भावना ही
तब उसकी पहचान बनेगी। न की जाए तो उसमें
रूप की समझने में भ्रम
होगा।

आत्मीयता बनाम अलगाव (18-35)

पहचान बनने के बाद लोग \Rightarrow जो नहीं जुड़ पाते उनमें
समाज से जुड़ने लगते हैं। अलगाव की भावना पैदा

अननात्मकता बनाम स्थिरता (35-65)

आने वाली पीढ़ी के बारे में \Rightarrow जिसमें अननात्मकता की
सोचकर कुछ धन लक्ष्य उसके भावना उत्पन्न नहीं होती
रखना साधन प्रदान। उनमें स्थिरता आ जाती है।

सम्पूर्णता बनाम निराशा = (65 से ऊपर)

बीते हुए समय के बारे में व्यक्ति सोचता है :-

यदि सकारात्मक विचार बनते हैं तो वो अपनी जीवन को सुखद अनुभव करता ।
यदि बीते हुए जीवन में सकारात्मक विचार नहीं बन पाते तो व्यक्ति उदासी में चला जाता है।

* कक्षा - शिक्षण & सीखना *

* कक्षाकक्ष वातावरण अच्छा होगा तो, पर्यावरण विद्यालय का अच्छा होगा।

* कक्षा में सीखने को प्रभावित करने वाले

कारक : — (1) बुद्धि

(2) अवधान (ध्यान)

(3) अभिरुचि

(4) अभिसमता

(5) परिपक्वता

(6) सीखने की विधि

(7) कक्षा की भौतिक अवस्थाएँ

(8) स्वास्थ्य, उम्र एवं लिंगभेद

* विद्यालय का वातावरण होना चाहिए — बाल-केन्द्रित

* विद्यालय स्तर पर कक्षा का माहौल होना चाहिए —

प्रतिस्पर्धात्मक & अनुशासनात्मक

* विद्यालय से विद्यार्थियों के भाग जाने का कारण

है — समस्या के प्रति शिक्षकों की

निर्दिष्ट अभिव्यक्ति

* सीखी हुई बात को स्मरण रखने या पुनः स्मरण करने की असफलता कहलाती — विस्मृति

* तर्कणा के प्रकार — आगमनात्मक (विशिष्ट से सामान्य)

निगमनात्मक
(सामान्य से विशिष्ट)

* सीखने के नियम \swarrow तैयारी (मूलभूत नियम)
 \searrow अभ्यास
 प्रभाव

* सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक:—

अनुकरण, प्रतियोगिता, प्रशंसा & निन्दा

* सीखने का क्षेत्र है:— आनुभाषिक

* सुधनशील बालकों में कौन-सा गुण पाया जाता

— मौलिकता

* प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक — थानडिस्क

* मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है— स्किनर

* शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति — 1900

* शिक्षा मनोविज्ञान का स्पष्ट स्वरूप आया — 1920

* मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध, निश्चित, सकारात्मक,

धनात्मक विज्ञान है — वाटसन

दर्शनशास्त्र से मनोविज्ञान की उत्पत्ति:—

16 वीं सदी — आत्मा का विज्ञान (प्लेटो, अरस्तू, डेकार्टे)

17 " — मन / मस्तिष्क " (पॉप्लॉन्जी)

→ 18 वीं सदी में अमान्य हो गई।

19 वीं " — चेतना का विज्ञान (बुष्ट, जैम्स, व्चिनर, वाट्सन)

20 वीं " — व्यवहार का विज्ञान (वाटसन, पुडवर्थ, स्किनर, मैक्डूगल, थानडिस्क)

* शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति है — वैज्ञानिक

✱ अधिगम स्थानान्तरण ✱

प्रतिपादक — धानडाबक

प्रकार: — 3

- ① सकारात्मक — एक स्थिति में सीखा ज्ञान दूसरी स्थिति में प्रयोग ।
- ② नकारात्मक — एक स्थिति में सीखा ज्ञान दूसरी स्थिति में बाधा उत्पन्न करे ।
- ③ शून्य — एक स्थिति का सीखा ज्ञान दूसरी स्थिति में न तो सहायक और न बाधा उत्पन्न करे ।

विशाओं के आधार पर प्रकार: —

- ① द्विपक्षीय: — द्विपक्षीय स्थानान्तरण
 ↳ दायें भाग द्वारा सीखे ^{गठ} कार्य को बायें भाग में हस्तान्तरित कर दिया जाए ।

उदा. — दोनों हाथों से लिखना ।

- ② क्षैतिज: — एक परिस्थिति का ज्ञान उसी से मिलती-जुलती परिस्थिति में डिया जाए ।

उदा. — भूगोल का उपयोग इतिहास समझने में

- ③ उच्च: — ~~प्रभावरक~~ ~~प्रभावरक~~

↳ एक प. में सीखा ज्ञान उससे उच्च परिस्थिति में डिया जाए ।

उदा. — II grade का अध्यापक, Ist grade का अध्यापक का ^{स्थान}

- ④ एकपक्षीय: — जब मानव शरीर के किसी एक अंग प्रयोग (चोट लगने) पर करे ।


७) अम्बात्मक : — एक के बाद एक कार्य को करने जाना।
 Ex - पहले जोड़ फिर घटाना फिर गुणा।


अधिगम स्थानांतरण के सिद्धान्त : —


मानसिक शक्तियों का सिद्धान्त	—	वील्फ
समत्त्व सिद्धान्त	—	थार्नडाइक
अवयवी	—	वर्दीमर, कोप्फा
मूल्याँ का	—	वागले
समान तत्वों का	—	थार्नडाइक
सामान्यीकरण का	—	C.H. जड
पूर्णकार का	—	फौलर


सीखने के वक्र : —

* अधिगम के वक्र 4 प्रकार के होते —

(1) सरल रेखीय : — सीखने की गति एक समान हो। 

(2) उन्नतोदर वक्र /
अव्युत्थानात्मक /
Convex (उत्तल) : — सीखने की प्रा. में तीव्र फिर
 मंद होने लगती है। 

(3.) नतोदर वक्र /
अव्युत्थानात्मक /
Concave (अवतल) : — सीखने की गति प्रा. में मंद
 बाद में धीरे-2 तीव्र होने
 लगती है। 

(4.) मिश्रित वक्र : — उन्नतोदर व नतोदर का मिला स्वरूप


* जब सीखने की गति रुक जाती है, तब बनता — पठार